

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद्ध-९, बुधवार, ता. २०-८-१९८०
 वचनामृत-२००. प्रवचन नं. १३

वचनामृत, २०० है न? मूल बात है, प्रभु! 'शुद्धनयकी अनुभूति...' मुझे की रकमकी बात है, भाई! प्रथम सम्यग्दर्शन होने पर शुद्ध अनुभूति होती है. आत्माका आनंद आदि अनंत गुणका वेदन व्यक्तपनेके अंशमें आता है. 'शुद्धनयकी अनुभूति अर्थात् शुद्धनयके विषयभूत अबद्धस्पृष्टादिर्प...' जो १५वीं गाथामें कला. जो कोई 'अप्पाणं' अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, अव्यक्त, असंयुक्त देभता है, वह जिनशासनको देभता है. अंतरमें अनंतआनंद (है), ऐसी जो अनुभूति, वह सर्व जैनशासनका सार है. आलाला..! 'शुद्धनयकी अनुभूति अर्थात् शुद्धनयके विषयभूत अबद्धस्पृष्टादिर्प शुद्ध आत्माकी अनुभूति...' आलाला..! जहां अबद्धस्पृष्ट-कर्मके साथ संबंध ही नहीं. भावकर्मके साथ संबंध नहीं है. ऐसी दृष्टि पर्याय परसे उठकर द्रव्य पर अंदर जाती है, तब अबद्धस्पृष्ट आदि अनुभूति होती है. आलाला..! धर्मकी शुरुआत यहांसे होती है.

'शुद्धनयकी अनुभूति अर्थात् शुद्धनयके विषयभूत अबद्धस्पृष्टादि...' १४वीं और १५वीं गाथा. १४वीं गाथामें सम्यग्दर्शनका विषय है. १५वीं में सम्यग्ज्ञानका. जिससे यह आत्मा अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, अविशेष गुण-ज्ञान, दर्शन, आनंद ऐसा भेद भी जिस दृष्टिमेंसे निकल जाता है. तब वह आत्माका त्रिकावका पत्ता लेकर, त्रिकावका-आत्माका अनुभव होता है. यह पूरे जैनशासनका सार है. आलाला..! शुरुआत यहांसे होती है. जैनधर्म कोई पक्ष नहीं है, प्रभु! यह कोई संप्रदाय नहीं है. यह तो वस्तुका स्वरूप (है), जैसा वस्तुका स्वरूप है जैसा भगवानने जाना, जैसा वाणीमें आया कि तेरी चीज अंदर अबद्धस्पृष्ट है. अबद्ध नाम मुक्त. आलाला..! और रागसे भी स्पर्श नहीं. आलाला..! और गुणभेदका भी स्पर्श नहीं. अभेद चीज है, अनुभवमें आनेवाली चीज है, उसमें गुणभेद भी, प्रभु! अनुभवमें नहीं आता. क्योंकि गुणभेद विकल्प है. आलाला..! गुण हैं अनंत. अनंतानंत. उसका अेकड़प आत्मा, उसका अनुभव हुआ. अबद्धस्पृष्टादिर्प शुद्ध आत्माकी अनुभूति (हुयी). आलाला..! पहली चीज यह है. बादमें दूसरी बात. व्रत, नियम तो सम्यग्दर्शन

होनेके बाद.

जो चीज ज्ञाननेमें आयी कि यह अनंत आनंद, अनंत शांतिका सागर नजरमें आया, उसमें स्थिरता करनेकी चीज बादमें शुरू होती है. चारित्रकी. पहली चीज ही दृष्टिमें आयी नहीं तो कहां स्थिर रहना? कहां जमना? कहां रहना? कहां स्थिर रहना? जो चीज ही दृष्टिमें आयी नहीं, अनुभवमें यह चीज आनंद है, अतीन्द्रिय आनंदका रसकंद है, ऐसा ज्ञानमें ज्ञेय, पूर्ण ज्ञेय ज्ञानमें वेदनमें न आये, तबतक स्थिरता किसमें करनी? चारित्र स्थिरता है. चरना है, रमना है. किसमें रमना? चीज ही जहां दृष्टिमें अनुभवमें आयी नहीं. आलाला..! पहले मुद्देकी रकमकी बात है.

मुमुक्षु :- मुद्देकी बात है.

उत्तर :- मुद्देकी बात है. बहिनने तो स्वयंको अंदर है वह बात बाहर रभी है. दुनियाको बैठे, न बैठे, दुनिया जाने. आलाला..!

उन्होंने तो बात रभी कि अबद्धस्पृष्टादृश्य आत्माकी अनुभूति वह शुद्धनयके विषयभूत है. शुद्धनय अर्थात् सम्यक्ज्ञान, जो स्वभाव सन्मुख ज्ञान (लुआ), पर्याय और पर-ओरसे जिसकी दशा विमुख (लुयी), उस दशाकी दृशा अबद्धस्पृष्टकी ओर जाती है. आलाला..! अंतरमें पूर्णानंदका नाथ, अपनी पर्यायमें अनुभवमें आनेवाला आया तो कहते हैं कि उसने सर्व ज्ञाना. अंगं ज्ञाणं सव्वं ज्ञाणं. ऐसा शब्द है, प्रवचनसारमें. एक आत्मा ही जानो और एक आत्माको ज्ञाना कब कहनेमें आये? आलाला..! अनादिअनंत पर्यायरूप आत्मा. अनादिअनंत पर्यायरूप आत्मा एक समयमें ज्ञाननेमें आता है. एक आत्मा ज्ञाना उसने तीनों कालकी पर्याय अंदर जानी है. आलाला..! प्रवचनसारमें ४७-४८ गाथामें बलता है. आलाला..! कोठकहे कि दूसरेको न जाने तो आचार्य कहते हैं कि, हम कहते हैं कि तूने एकको तो ज्ञाना है कि नहीं? तू तो त्रिकावी है. तू त्रिकावी है, एक समयमात्रका तो है नहीं. तुमको ज्ञाना तो तुम्हारी तीन कालकी पर्याय ज्ञाननेवाला उसमें आ गया. आलाला..! समझमें आया?

यहां यह कहा, 'शुद्धनयके विषयभूत अबद्धस्पृष्टादृश्य...' पांच बोल है न? पांच बोल. 'शुद्ध आत्माकी अनुभूति...' अबद्धस्पृष्टादृश्य मुक्त स्वरूप अभेद में हूं, ऐसा अंतरमें अनुभव लुआ-अनुभूति लुयी, आनंदका स्वाद आया. आलाला..! और पूर्णानंदका नाथका पूर्ण जितनी चीज है, सबका पर्यायमें नमूना आ गया. क्या कहा वह? जितने अंदर गुण हैं, संप्र्यासे अनंतानंत, जहां सम्यक्दर्शन लुआ, अनुभूति लुयी तो पूरे आत्माके गुणका एक अंश व्यक्त सब आ गये. एक तो

त्रिकावीमें आ गया और सर्व गुणका व्यक्त अंश आ गया. अेकको ज्ञाना तब कला ज्ञाय कि त्रिकावी अेक है, अैसा ज्ञाना तब त्रिकावीको ज्ञाना. कोरु कले कि वर्तमान ही ज्ञाने, लविष्यका नलीं ज्ञानते हैं. (उसे पूछे कि), तू अेक है कि नलीं? तू त्रिकावीमें है कि अेक वर्तमानकाल है. तीन कालको ज्ञाननेवाला तू... अैसा शब्द है वलां, वल र्थां बलुत लुयी थी. र्न्तौरसे अंसीधरज्ज आये थे. शेठ लुकमीरंज्ज आरुि आये थे.

अेकको ज्ञाना उसने तीन कालको ज्ञाना. क्युंकि आत्मा तीन कालमें रलनेवाला है. आलाला..! और तीन कालकी पर्यायिका पिंगु, उसे ज्ञाना तो तीन कालको ज्ञाना. त्रिकालकी पर्यायि ली अंतरमें आ गयी है. द्रव्यकी दृष्टिमें पर्यायिकी दृष्टि, पर्यायिदृष्टि नलीं, परंतु पर्यायिका ल्दे आ गया. आलाला..! सूक्ष्म बात है, प्रलु! यल कोरु विद्वत्ताकी वस्तु नलीं है. यल कोरु पंडितारुकी र्थिज नलीं है. आलाला..!

मुमुक्षु :- अनुलवकी बात है.

उत्तर :- यल तो अंतरकी बातें है, आपू! बोलनेमें कोरु बात सीज ले, अैसी यल बात नलीं है. यल तो अंतर अनुलवकी बात है. आलाला..!

जिसने शुद्धनयकी अनुलूति अर्थात् शुद्धनयके विषयलूत अबद्धरूपृष्टादिरूप. सामान्यपना-ल्लेद नलीं, पांय बोल है न? पर्यायिका ल्लेद नलीं. पांय बोल आये हैं न? उसे ज्ञाना. 'शुद्ध आत्माकी अनुलूति सो संपूर्ण जिनशासनकी अनुलूति है.' जिसने आत्माके अनुलवमें अनंत आनंद (ज्ञाना), त्रिकावीको ज्ञाना और त्रिकावीका अेक अंश वर्तमान वेदनमें आया, वल र्थिज पूर्ण है. यलां तो नमूना आया है. जैसा अंश आया, अैसी पूर्ण र्थिज है. अनंत गुणका अंश वेदनमें आया तो अनंत अंश व्यक्त बाह्यमें आया, (अैसी) अव्यक्त पूर्ण र्थिज अंदर है. अव्यक्त नाम बाह्य पर्यायिमें वल र्थिज आ नलीं सकती. आलाला..!

द्रव्य जे है वल पर्यायिमें नलीं आ सकता. क्युंकि वेदन तो पर्यायिका ही लोता है. ध्रुवका कली वेदन लोता नलीं. आलाला..! १७२ गाथा. अलिंगग्रलणुके २० बोल लिये हैं, उसमें २०वे बोलमें लिया है कि ध्रुवका अनुलव नलीं लोता. ध्रुव तो अेकरूप टिकनेवाली र्थिज है. सनातन त्रिकाल अेकरूप, बिना पलटती लुयी. उसकी दृष्टि पर्यायि है, पर्यायिमें जे उसका अनुलव लुआ वल पर्यायिका वेदन है. और पर्यायिका वेदन है उसके द्वारा, नमूना द्वारा पूरी र्थिज अैसी है, अैसा प्रतीतमें आ गया. जिसका नमूना आया नलीं, उसको यल र्थिज पूर्ण अैसी है, उसकी प्रतीत कलांसे लुगी? आलाला..!

यहां कहा, 'संपूर्ण जिनशासनकी अनुभूति है.' जिसने भगवान आत्मा त्रिकावी वर्तमानमें ज्ञाननेमें आया और त्रिकावीका नमूना भी वर्तमानमें आया.. आलाला..! यह पूर्ण यीज अनादिअनंत ऐसी है, उसने पूरे यौदह ब्रह्मांडको ज्ञाना. संपूर्ण जिनशासनकी अनुभूति है. 'यौदह ब्रह्मांडके भाव उसमें आ गये.' ब्रह्मांड अर्थात् यौदह राजू लोक है न? रातको प्रश्न आया था कि यौदह ब्रह्मांड यानी क्या? उसे राजू कहते हैं शास्त्र, यौदह राजू लोक. यौदह राजू लोक लंबा है न. यौदह ब्रह्मांडके भाव, अेक ज्ञाननेमें आता है तो सब ज्ञाननेमें आता है, ऐसा प्रवचनसारमें ४७-४८ गाथामें है. यहां तो ँतना शब्द लिया. आलाला..! 'यौदह ब्रह्मांडके भाव उसमें आ गये.' यह आत्मा ऐसा है, जैसे ही अनंत आत्मा हैं, और उससे विपरीत अनंत ७९ भी अनुभूतिकी शक्तिसे रहित है, ऐसा यौदह ब्रह्मांडका ज्वाल उसमें आ गया. आलाला..! कठिन बात है, प्रभु! यह को पंडिताईकी यीज नहीं है. अंतरकी यीज है. व्यवहार पर वजन दे, (लेकिन) व्यवहार तो लेय है. कथनमात्र ... है. कथनमात्र कहे बिना समझे नहीं, ऐसा तो आवे शास्त्रमें. पहले ढवीं गाथामें आया न? कि आत्मा कहा गुरुने, शिष्यने सुना. पहले दृष्टांतमें आया कि ब्राह्मणने स्वस्ति कहा. ब्राह्मण आया कोई, (उसने) स्वस्ति (कहा). सुननेवाला समझ नहीं तो टग-टग, टग-टग देभता रहा. विरोध न किया, अनादर न किया. समझमें नहीं आया. समझमें नहीं आया तो अनादर न किया. ऐसा पाठ आता है. टग-टग देभता है. स्वस्ति क्या? क्या कहते हैं? बादमें जब उसका स्पष्टीकरण किया, प्रभु! स्वस्तिका अर्थ स्व-तेरा स्व उसका अस्ति, जैसी यीज है ऐसा तेरा कल्याण हो. आलाला..! स्व तेरी जैसी अस्ति है, उसका तुजे अनुभव हो. यह स्वस्तिका अर्थ है. तो सुननेवालेकी आंजमें आंसू आ गये. ओहोहो..! यह बात!

जैसे गुरुने आत्मा कहा, सुना. परंतु आत्मा ज्ञाना नहीं कि क्या है और अनादर नहीं किया कि आत्मा-आत्मा क्या करते हो? दूसरी बात तो वो. ऐसा कुछ नहीं (किया). आत्मा कहा तो सुननेमें टग-टग देभने लगा. ऐसा प्रश्न नहीं हुआ कि सालभ! आत्माके सिवा दूसरी बात तो करो पहले पुद्गलकी, छः द्रव्यकी, देव-गुरु-शास्त्रकी. ऐसा प्रश्न किया नहीं. गुरुने आत्मा कहा तो विनयवंत शिष्य टग-टग देभता है. समझ नहीं. आत्मा क्या, समझ नहीं. उसका उत्तर कहा, प्रभु! कहनेवालेने कहा अथवा दूसरेने कहा, ऐसा पाठ है. दूसरेने अथवा कहनेवालेने कहा, आत्मा दर्शन, ज्ञान, चारित्रको प्राप्त हो वह आत्मा. अस. दर्शन, ज्ञान, चारित्रको प्राप्त हो. वह सम्यग्दर्शन निर्मल. निश्चय सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रको प्राप्त करे वह

आत्मा. ईतना व्यवहार कथनीमें आया. अंदरमें भेद नहीं है, वस्तुमें भिन्न नहीं है. दर्शन, ज्ञान, चारित्र अभेद आत्मामें है. परंतु कथनीमें भेद करके आया तो कथनी तो जड़की है. आलाहा..! परंतु वह कथनी आती है. परंतु उस कथनीको समझमें आता नहीं. क्योंकि वह तो जड़ है. आलाहा..! बादमें टग-टग देभता है. उसने कहा तो उत्तर यह कहा.

प्रभु! तेरा आत्मा अंदर त्रिकावी है. दर्शन, ज्ञान, चारित्रको प्राप्त हो वह आत्मा. रागको प्राप्त हो, व्यवहार रत्नत्रयको प्राप्त हो वह आत्मा, ऐसा कहा ही नहीं. आलाहा..! अभी तो प्रथम शिष्य है, आत्माका अर्थ समझता नहीं. उसको भी यह कहा. आलाहा..! जैनज्ञानसकी उत्कृष्टता अवैकिक है. जगतमें तो कहीं नहीं है. वीतराग परमात्माके सिवा, तीन लोकके नाथ सर्वज्ञदेव विराजते हैं प्रभु. कुंडकुंदाचार्य यहां गये थे, आठ दिन रहे थे. सुनकर आये और यह शास्त्र बनाया. आत्मा कहकर, दर्शन, ज्ञान, चारित्रको प्राप्त करे वह आत्मा, ऐसा बनाया. वह व्यवहार है, वह भी व्यवहार है. राग दया, दान, व्रत व्यवहारकी बात तो ली ही नहीं. पंडितजी! यह बात ली ही नहीं.

मात्र प्रभु अंतरमें दर्शन, ज्ञान, चारित्र जो स्वभाव है, वह व्यक्तपने पर्यायमें ज्ञाननेमें आया और उसके द्वारा आत्मा ज्ञाननेमें आता है. ईतना व्यवहार आये बिना रहता नहीं. फिर भी आचार्य कहते हैं, मैंने ऐसा कहा, दर्शन, ज्ञान, चारित्रको प्राप्त करे वह आत्मा. प्रभु! मैं कहता हूं, यहां पाठ है, यह बात मुझे भी अनुसरण करनेवायक नहीं है और तुझे भी अनुसरण करनेवायक नहीं है. आलाहा..! है न? है अंदर. मैं कहता हूं, प्रभु! मुझे अनुसरण करनेवायक नहीं है. दर्शन, ज्ञान, चारित्रको प्राप्त हो वह आत्मा, ऐसा मुझे भी अनुसरण करनेवायक नहीं है. तीनको छोड़कर आत्माका अनुसरण करना ही मेरी चीज है. और तुझे भी मैंने भेद करके समझाया, तुझे भी वह भेद अनुसरण करनेवायक नहीं है. आलाहा..! ऐसा पाठ है. मुझे और तुझे, जो व्यवहार कहा वह अनुसरणीय नहीं है, अनुसरणीय नहीं है, अनुसरणीय नहीं है. जो कहते हैं वह करनेवायक नहीं है. अनुसरणीय नहीं है. कहते हैं उसका वर्णन करना नहीं. आलाहा..! पहले शब्दमें (ऐसा कहा). समयसार, ८वीं गाथा. 'ज ह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं'. आलाहा..!

वैसे यहां कहते हैं, जिसे आत्माकी अनुभूति (सुधी)... प्रवचनसारमें भी ऐसा लिया है कि तू ऐसा माने कि तीन कावको न ज्ञान सके. तो मैं पूछता हूं कि तू तीन कावमें है कि नहीं? तू तुझे ज्ञानता है तो तीन काव ज्ञाना है या नहीं?

तुमको ज्ञान तो उसमें तीन काव आया कि नहीं? आलाहा..! आचार्योंकी तो बलिवारी है. बहुत संक्षिप्त शब्दोंमें अंतरकी अनुभवकी बातें रची है. यहां कलते हैं, 'आत्माकी अनुभूति सो संपूर्ण जिनशासनकी अनुभूति है. यौदह ब्रह्मांडके भाव उसमें आ गये.' आलाहा..! अक आत्मा जैसे ज्ञान तो अनंत आत्मा जैसे हैं और उससे-आत्मासे रहित अनात्मा भी जड अनंत हैं. अस्तिका जहां भान हुआ तो नास्तिका भी ज्ञान आ गया. आलाहा..! मेरेमें अनंत आत्माकी नास्ति है और अनंत जडकी भी नास्ति है. वह भी मेरेमें अस्ति है. परकी नास्ति मेरेमें अस्ति है. आलाहा..! समजमें आया?

यहां कलते हैं, 'यौदह ब्रह्मांडके भाव उसमें आ गये.' अनुभूति लुयी उसमें यौदह ब्रह्मांडके भाव आ गये. आलाहा..! कठिन पडे, प्रभु! प्रभु! तू त्रिकावी है न. अक समयका नहीं है. त्रिकावी है और अनंत गुणका पिंड है. उसे जहां ज्ञान... दूसरी चीज भी है, मैं अक ही हूं ऐसा ज्ञानमें नहीं, ज्ञानमें तो स्वपरप्रकाशक स्वभाव है. तो स्वका और परका ज्ञान उसमें आ जाता है. आलाहा..! सम्यक्दृष्टिके ज्ञानमें भी अव्यक्तपने भी स्वपरप्रकाशक तो आ जाता है. पूरा प्रत्यक्ष केवली दृष्टे ऐसे नहीं. मैं हूं, दूसरी चीज भी है लेकिन मेरेमें नहीं है. आलाहा..! अक आत्माका ज्ञान होनेसे यौदह ब्रह्मांडका ज्ञान हो गया. यौदह ब्रह्मांडका नाथ जिसके हाथमें-अनुभवमें आ गया, उसे क्या क्षति रही? आलाहा..! प्रथम तो यह करनेकी चीज है, प्रभु! इसके बिना सब व्यर्थ है. बिना अकके शून्य है. बाज शून्य विजे तो अक नहीं हो जाता. आलाहा..! अकके बाद शून्य विजे तो दस हो जाय. वैसे अनुभव होनेके बाद स्वप्नमें स्थिरता करे तो चारित्र हो जाय. समजमें आया? अंतरकी दृष्टिके अनुभव बिना स्थिरता भी होती नहीं, दृष्टि भी होती नहीं. आलाहा..!

'मोक्षमार्ग...' भी ज्यावमें आ गया, कलते हैं. जहां आत्माकी अनुभूति लुयी.. आलाहा..! वही मोक्षमार्ग है. भले यौथे गुणस्थानमें लिया. समयसारमें १४वीं गाथा समकित्तीकी ही विभी है, यौथे गुणस्थानकी ही वी है. १५वीं भी समकित्तीकी ही वी है. आत्माको ज्ञान (उसने) जैनशासन ज्ञान लिया. जैनशासनका जो अंदर मर्म था, त्रिकावमें अनंत गुण (हैं), ऐसा जो द्रव्यका मर्म था, ऐसा भान हुआ तो यौदह ब्रह्मांडका भाव आ गया. आलाहा..! समजमें आया?

यहां तो बलिन कलते हैं, मोक्षमार्ग भी ज्ञान लिया. आला..! अनुभूति लुयी तो मोक्षका मार्ग यही है, (ऐसा ज्ञान लिया). आला..! अतीन्द्रिय आनंदका वेदन ही मोक्षका मार्ग है. और अतीन्द्रिय आनंदकी पूर्णता मोक्ष है. आला..! आत्माकी

अनुभूतिमें मोक्षमार्गका भी ज्ञान हो गया. अरे..! केवलज्ञानका भी ज्ञान हो गया. आलाहा..! क्योंकि एक संपूर्ण चीज पडी है, उसमेंसे नमूनामात्र प्रगट व्यक्ति आयी है, पूर्ण पडा है तो उसका नमूना आया. तो जब पूर्णमेंसे पूर्ण प्रगट होगा, पूर्णमेंसे पूर्ण प्रगट होगा केवलज्ञान. अनुभूतिमें केवलज्ञानका भी ज्ञान आ गया. आलाहा..!

और 'मोक्ष...' उसका ज्ञान भी आ गया. क्योंकि अबद्धस्पृष्ट है वह मुक्त है. आत्मा मुक्त है. पूर्ण मुक्त हो जायगा, वह तो उसमें आ गया. पर्यायमें पूर्ण मुक्त हो जायगा. द्रव्य मुक्त है. द्रव्यका भान हुआ तो पर्यायमें मुक्त हो जायगा. क्योंकि मुक्तकी परिणति मुक्त होगी. आलाहा..! तो मोक्षका ज्ञान भी उसमें आ गया. 'ईत्यादि सब ज्ञान लिया.' ईत्यादि सब ज्ञान लिया. आलाहा..! तीन पंक्तिमें बहुत बरा है. आलाहा..! ईत्यादि. मोक्ष ईत्यादि. आदिसे लेकर सब ज्ञान लिया. आला..! पर्यायका ज्ञान हो गया, गुणका ज्ञान हो गया. प्रगट हुयी पर्याय, प्रगट शक्तिमेंसे हुयी है तो शक्ति-गुण है और एक ही पर्याय नहीं हुयी, अनंती आयी है. अनंत गुण जो हैं, अनंत गुणका अकल्प द्रव्य भी है. अनंत गुणका रूप एक द्रव्य भी है. द्रव्यका ज्ञान, गुणका ज्ञान, पर्यायका ज्ञान भी आ गया. आलाहा..! 'ईत्यादि सब ज्ञान लिया.'

'सर्व गुणांश सो समकित'. यह श्रीमद्का वाक्य है. सर्व गुणांश. जितने अनंत.. अनंत.. अनंत.. गुण भगवान आत्मामें संख्यासे हैं, सबका एक अंश समकितमें प्रगट होता है. अपने मोक्षमार्ग प्रकाशकमें रहस्यपूर्ण चिह्नों में टोडरमलज्जने लिया है. यहां ऐसा शब्द लिया है, यहां श्रीमद्ने सर्वगुणांश सो समकित कहा है, उन्होंने ऐसा लिया है कि ज्ञानादि अकदेश सर्व प्रगट होते हैं. चिह्नों में है. ज्ञानादि जितने गुण हैं, उन सबका एक अंश प्रगट होता है. और केवलज्ञानमें ज्ञानादि पूर्ण प्रगट होते हैं. दो लेख है. चिह्नों में दोनों लेख है. रहस्यपूर्ण चिह्नी. आलाहा..! अरे..! प्रभुका एक वाक्य भी कितना रहस्ययुक्त है! हिन्दी आता है कि नहीं?

'सर्व गुणांश सो समकित' अनंत गुणोंका अंश प्रगट हुआ;...' आला..! सम्यग्दर्शन अर्थात् सत्य दर्शन. अर्थात् जितना सत्य है, जितना परम सत्य है, उन सबका एक अंश पर्यायमें आता है. उसका नाम समकित कहनेमें आता है. वह अंश ज्ञान हुआ. अंशका ज्ञान होनेसे पूर्ण आत्माका ज्ञान भी हो गया. बीजका ज्ञान होनेसे, बीज समझे? दृष्ट. दृष्ट विभा है? दृष्टको दिखाती है, लेकिन आकार भी है उसमें. दृष्टके दिन भी पूर्ण आकार दिखाता है. देखा है चंद्र? दृष्ट ईतनी

है, परंतु पूरा आकार-पूर्णाका आकार भी साथमें टिभता है। भवे भुवा नहीं है, आकार टिभता है। आलाला..!

ऐसे सम्यग्दर्शनमें पूर्ण चीज है, परंतु पूर्ण चीज क्या है, उन सबका ज्ञान अंदर आता है। आलाला..! सम्यग्दर्शन और अनुभूति कोई अलौकिक चीज है! भवे गृहस्थाश्रममें हो, राजपाट धंधा, चक्रवर्तीका राज करे, फिर भी अनुभूति होती है। आलाला..! और द्रव्यविंगी सब छोडकर बैठे और नौवीं ग्रैवेयक अनंत बैर (गया)। ऐसी क्रियाकांड की कि चमडी निकावकर नमक छिडके तो भी क्रोध न करे, ऐसी क्रिया की, लेकिन अक भी अंश आत्माका नहीं जाना। सब पुण्यकी क्रिया, जहरकी क्रिया, सब जहरके प्याले हैं। आलाला..! मोक्ष अधिकारमें है, विषकुंभ। मोक्ष अधिकार। शुभभाव विषकुंभ है, ऐसा विभा है। जहरका घडा है। विषकुंभ। भगवान् अमृतकुंभ। आलाला..! अतीन्द्रिय आनंदका नाथ अमृतका सागर है और यह पुण्यादि है.. आलाला..! दरिया नहीं कला, जहरका घडा कला। अक समयकी पर्याय है न। समयकी पर्याय है।

मुमुक्षु :- यहां तो जहरका घडा है, यहां अमृतका दरिया है।

उत्तर :- दरिया। भगवान् अमृतका दरिया है। यह अक अमृतका अंश है। तो इस अंश द्वारा पूरे अंशीका प्याल आया। अंशके प्यालमें पूरे अंशीका (प्याल आ गया)। जैसे दूजकी देभनेसे दूजका प्याल और पूर्ण आकार ऐसा है, आज ऐसी (कला) है, यह सब ज्ञान हो गया। आलाला..! अरे..! सब अंश तो प्रगट हुआ, 'समस्त लोकालोकका स्वरूप ज्ञात हो गया।' इस ज्ञातसे ज्ञातकी जहां छाप अंदरमें पडी, आलाला..! तो 'समस्त लोकालोकका स्वरूप ज्ञात..' होता है। यह ज्ञान र्तना है तो पूर्ण लोकालोक है और पूर्ण ज्ञान भी है, उसका ज्ञान हो जाता है। आलाला..!

'जिस मार्गसे यह सम्यक्त्व हुआ...' जिस मार्गसे अर्थात् अंतर्भुजसे भगवान् अनंत गुणका पिंड पूर्णरूप जहां बीज पडा है, 'जिस मार्गसे सम्यक्त्व हुआ,....' इस मार्गसे समकित हुआ। अंतर्भुज दृष्टिसे पूर्णानंदके नाथको दृष्टिमें लिया तो सम्यग्दर्शन हुआ। 'उसी मार्गसे मुनिपना...' आलाला..! जिस मार्गसे आत्मज्ञान हुआ, उसी मार्गसे मुनिपना होगा। मुनिपना कोई क्रियाकांडसे होगा ऐसा नहीं। ऐसा कलते हैं। आलाला..! कठिन बात है, भाई! २०० नंबरका वचनमृत है। पूर्ण.. पूर्ण। आलाला..! 'जिस मार्गसे यह सम्यक्त्व हुआ, उसी मार्गसे मुनिपना...' आलाला..! अंतर आनंदके आश्रयसे समकितकी प्रतीति लुयी, उसके आश्रयसे मुनिपना उत्पन्न होता है। चारित्रकी दशा, वीतरागकी दशा, पंचम गुणस्थानकी दशा, छठे गुणस्थानकी

दशा, जिस मार्गसे समकित हुआ, उसी मार्गसे यह मुनिपना आदि होता है। मार्ग कोई दूसरा नहीं है। आलाला..! 'मुनिपना और केवलज्ञान होगा...' उसी मार्गसे मुनिपना भी होगा और केवलज्ञान भी होगा। आलाला..!

केवलज्ञान तो पर्याय है न? अंश है। पूरा अंशी दृष्टिमें आया, यही मार्ग है, दृष्टिमेंसे-वस्तुमेंसे केवल नाम पूर्ण दशा प्रगट होगी। ऐसा केवलज्ञान स्वके आश्रयसे होगा। मुनिपना स्वके आश्रयसे होगा। स्वाश्रयसे धर्म, पराश्रयसे अधर्म। वीतरागके दो सिद्धांत। अष्टपालुडमें है। 'परदब्बादो दुग्गइ सदब्बा हु सुग्गइ' ऐसा पद है। जितने परद्रव्य हैं, उसका लक्ष्य करनेसे राग ही होगा। 'सदब्बा हु सुग्गइ'। स्वद्रव्यके आश्रयसे तेरी गति होगी। आलाला..! ऐसा मार्ग है। उसका साधन? साधन-बाधन होगा कि नहीं? यह साधन। व्यवहार उपचारसे पूर्णता न हो तो रागकी मंदता होती है। उपचारसे साधन कलनेमें आता है। यथार्थ तो स्वद्रव्यके आश्रयसे सम्यक् उत्पन्न हुआ, स्वद्रव्यके आश्रयसे मुनिपना और स्वद्रव्यके आश्रयसे केवलज्ञान। आलाला..!

'ऐसा ज्ञात हो गया। पूर्णताके लक्ष्यसे प्रारंभ हुआ;...' क्या हुआ? पूर्णताके लक्ष्यसे। पूर्ण स्वरूप जो भगवंत, उसके लक्ष्यसे प्रारंभ हुआ है। शुरुआत यूं लुयी है। पूर्णताके लक्ष्यसे शुरुआत लुयी है। 'ईसी मार्गसे देशविरतिपना,...' आलाला..! ईसी उपायसे आत्मामें पंचम गुणस्थान-श्रावकपना (आयेगा)। आत्माके आश्रयसे सम्यग्दर्शन हुआ, जैसे पंचम गुणस्थान आत्माके आश्रयसे उत्पन्न होता है। आलाला..! कोई क्रियाकांडके आश्रयसे पंचम गुणस्थान नहीं होता। क्रियाकांड होता है, भूमिका अनुसार रागकी मंदता, क्रिया होती है। परंतु हेय है। 'ईसी मार्गसे देशविरतिपना...' आलाला..! स्वद्रव्यके आश्रयसे श्रावकपना (आता है)। उसको श्रावक कहते हैं। संप्रदायमें जन्म हुआ और कोई प्रतादि ले लिये, तो श्रावक है, ऐसा जैनमार्गमें है नहीं। आलाला..!

जैनमार्गमें 'ईसी मार्गसे देशविरतिपना...' आत्माके अवलंबनसे होता है। जैसे सम्यग्दर्शन, ज्ञान आत्माके अवलंबनसे हुआ, वैसे पंचम गुणस्थान आत्माके अवलंबनसे, आनंदके अवलंबनसे (होता है)। सम्यग्दर्शन तो अवलंबनसे हुआ ही है, ईससे विशेष अवलंबन लेनेसे पंचम गुणस्थान होता है। जघन्य अवलंबन लेनेसे समकित, मध्यम अवलंबन लेनेसे पंचम, छद्म आदि, उत्कृष्ट अवलंबन लेनेसे केवलज्ञान। आलाला..! ऐसी बात है। 'देशविरतिपना, मुनिपना, पूर्ण चारित्र अवं केवलज्ञान-सब प्रगट होगा।' ईस मार्गसे। दूसरा कोई मार्ग है नहीं। आलाला..!

‘नमूना टेभनेसे पूरे भावका पता चल जाता है.’ दृष्टांत देते हैं. नमूना टेभनेसे... इधकी बडी गांठ होती है न? क्या कहते हैं? इधका गोवा. २५-२५ भाग. उसका नमूना बताये कि इस बातका है. गांठ इस बातकी है. किमत देनेकी है तो यह किमत है. पूरी गांठ नहीं टेभते, उसका नमूना टेभे कि पूरी गांठ ऐसी है. जैसे ‘नमूना टेभनेसे पूरे भावका पता चल जाता है.’ आलाला..! अक सम्यदर्शनकी पर्याय लुयी तो अंदर श्रद्धागुण पूर्ण है ऐसा पता लगता है. आनंदका अंश लुआ तो अंदर पूर्णानंद है उसका पता लग जाता है. शांति प्रगट लुयी-चारित्रका अंश तो अंतरमें पूर्ण शांति गुणमें लरी है ऐसा पता लग जाता है. जैसे वीर्यका अंश प्रगट लुआ. वर्तमान निर्मल गुणकी पर्यायकी रचना करनेवालेको वीर्य कहते हैं. स्वर्पकी रचना करनेवालेको वीर्य कहते हैं. ४७ शक्तिमें आ गया है. समयसार, ४७ (शक्तिमें) यह शब्द है. स्वर्पकी रचना करे सो वीर्य. आलाला..! अपना स्वर्प शुद्ध चैतन्यघन आनंदकंद है, उसमें जो रचना पर्यायमें निर्मलता करे उसका नाम वीर्य (है). आलाला..! और रागकी रचना करे, वह तो अति स्थूल (है). सम्यदर्शन बिना शुभभावको तो नपुंसकताकी उपमा दी है. दो जगल है-पुण्य-पाप और अशुभ अधिकारमें, समयसार. आलाला..!

यहां कहते हैं कि, पूर्णताके लक्ष्यसे प्रारंभ लुआ, उससे सब प्रगट होगा. ‘नमूना टेभनेसे पूरे भावका पता चल जाता है. दूजके चंद्रकी कला द्वारा...’ टेभो! दृष्टांत दिया. ‘दूजके चंद्रकी कला द्वारा पूरे चंद्रका ज्वाल आ जाता है.’ पूरा चंद्र टेभा. उसकी ... टेभा. विकास कितना है, अवरोध कितना है, पूर्ण कितना है, तीनों टेभनेमें आता है. आलाला..! जैसे सम्यदर्शन लुआ तो विकास कितना लुआ, कितना विकास बाकी है, विकासमें अवरोध कितना है, उसका सब ज्ञान लो जाता है. सब अपने कारणसे अवरोध है, कोरि कर्मके कारणसे नहीं. कोरि परद्रव्यसे आत्मामें कुछ होता है, बिलकूल नहीं. आलाला..! अनादिअनंत आत्माकी पर्याय आत्मासे होती है. विकारी, अविकारी, मिथ्यात्व या केवल.

‘गुडकी अक डलीमें पूरी गुडकी पारीका पता लग जाता है.’ गुड.. गड. अक कणिकामें पूरा गुड कैसा है, पारी, गुडकी पूरी पारी होती है, उसमें अक कणिकासे पारी ज्वालमें आ जाती है. जैसे ज्वालमें आ जाता है. ‘यहां (दृष्टांतमें) तो भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं...’ क्या कहते हैं? यहां तो भिन्न-भिन्न द्रव्य है. गुड अक द्रव्य नहीं. आलाला..! जैसे चंद्रमा ली अक परमाणु नहीं है. अक द्रव्य नहीं. चंद्रमामें तो अनंत परमाणु है. गुडकी अक कणिकामें अनंत परमाणु हैं. यहां कहते

हैं, 'यहां (दृष्टांतमें) तो भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं और यह तो एक ही द्रव्य है.' यह भगवान तो एक ही द्रव्य है. आह्लाहा..! यह तो अनंत द्रव्यमेंसे दृष्टका दृष्टिभाव हो, गुडका नमूना हो, यह अनंत परमाणु हैं, एक परमाणु नहीं है. आह्लाहा..! इसमें तो एकमें सब आता है. एक ही भगवान आत्मा... आह्लाहा..! अपनी पर्यायमें अकेले आत्मद्रव्यसे प्रगट होता है, अकेले आत्माके आश्रयसे मुनिपना होता है, अकेले आश्रयसे केवलज्ञान होता है. मोक्ष तो होता ही है. आह्लाहा..!

'यहां (दृष्टांतमें) तो भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं और यह तो एक ही द्रव्य है.' आत्मा. क्या कला? दृष्टमें तो अनंत परमाणुका प्रकाश है. एक परमाणुका नहीं. वैसे गुडकी कणिकामें अनंत परमाणुका स्कंध है. जैसा आत्मामें नहीं है. आह्लाहा..! यह तो दृष्टांत दिया है. आत्म भगवान एक ही वस्तु अभंडानंद प्रभु है. आह्लाहा..! 'यह तो एक ही द्रव्य है. इसलिये सम्यक्त्वमें थोड़ा ब्रह्मांडके भाव आ गये.' आह्लाहा..! एक द्रव्यका भान हुआ... अधिकार बहुत अच्छा आ गया है. बहिनने तो उस वक्त बोला था. दोपहरको आते हैं. आह्लाहा..! क्या कला?

गुड और दृष्ट, एक द्रव्य नहीं है, अनंत परमाणु हैं. यह तो दृष्टांतमें आया. सिद्धांतमें आत्मा तो एक ही है, एक ही पूर्ण है, उसमेंसे पूर्णता प्रगट होती है, सम्यग्दर्शन प्रगट होता है, मुनिपना और केवलज्ञान उसमेंसे ही प्रगट होते हैं. दूसरा कोई उपाय है नहीं. आह्लाहा..! दूसरा द्रव्य है नहीं, उसमें-प्रकाशमें तो अनंत द्रव्य हैं. इसमें तो एक ही द्रव्य है. आह्लाहा..! अकेले द्रव्यके आश्रयसे केवलज्ञान उत्पन्न होता है. अकेले आत्माके आश्रयसे केवलज्ञान उत्पन्न होता है. आह्लाहा..! मनुष्यपना बिना मोक्ष होता है? वज्रनाराय संलनन बिना केवलज्ञान होता है? जैसा कुछ लोग कहते हैं. प्रश्न बहुत आते हैं. यह हो लवे, उससे आत्मामें लाभ होता है जैसा नहीं. वज्रनाराय संलनन तंदुल मच्छको भी होता है. अंगूलका असंभ्यवां भाग. वज्रनाराय. और मरकर सातवीं नर्कमें जाता है. आह्लाहा..! सुना है? तंदुल मच्छ कहते हैं. है तो छोटा. तंदुल तो यावव है, यह तो बडा है. यह तो बहुत सूक्ष्म है, अंगूलका असंभ्यवा भाग. लेकिन है वज्रनाराय संलनन. तो यह नर्कमें जाता है तो संलननके कारण नहीं. वैसे यहां केवलज्ञान प्राप्त होता है यह संलननके कारण नहीं. आह्लाहा..!

मुमुक्षु :- यह वाणी सुनकर नर्कमें नहीं जाता.

उत्तर :- सब आत्मा मोक्षमें जाओ, यहां तो यह बात है, भाई! सब आत्मा मोक्ष जाओ, होगा. द्रव्य संग्रहमें कला, दृष्टियामें कोई भी दुश्मन है ही नहीं.

કોઈ વૈરી નહીં છે. સબ ભગવાન સાધર્મી છે. દ્રવ્યસે, દ્રવ્યસે સાધર્મી છે. પર્યાયમાં સ્વતંત્ર છે. દ્રવ્ય અંદર ભગવાન છે, સબ સાધર્મી છે. યહ તો ત્રીન જગલ, પાંચ જગલ કહા છે. આહાહા..! એક તો દ્રવ્ય સંગ્રહમાં કહા, પૂર્ણ હો જાઓ. એક, યહાં સમયસારકી ૩૮ ગાથામાં કહા, મેં એસે (લીન હો જાઉં), એસે સબ જીવ આ જાઓ. ૩૮ ગાથામાં છે. સમયસારકી ૩૮ ગાથા. સબ જીવ આ જાઓ. આહાહા..! ભગવાન! તેરી શક્તિ તો પૂર્ણ છે ન, પ્રભુ! પૂર્ણતા છે ઉસમાંસે પૂર્ણતા પ્રગટ કરની છે ન, નાથ! તો સબ ભગવાન આ જાઓ. લોકાલોક જાનનેમાં આ જાઓ, એસા લિખા છે. ઓર સમયસારમાં ત્રીન જગલ છે. એક બંધ અધિકારમાં આખિરમાં, મોક્ષ અધિકારમાં આખિરમાં ઓર સર્વવિશુદ્ધ અધિકારમાં છે. બડી બાત. સર્વ નિર્વિકલ્પો. મન-વચન-કાયા રહિત સબ પૂર્ણ પરમાત્માકો પ્રાપ્ત હોઓ, એસી ભાવના કરની ચાહિયે. આહાહા..! બહુત લંબી બાત છે. ઉદાસીન હું, ભરિતઅવસ્થ હું, ભરિતઅવસ્થ-અવસ્થ યાની પૂર્ણ. એસા શબ્દ પડા છે. ઉદાસીનો અહં, ભરિતોવસ્થ અહં, શુદ્ધો અહં, બુદ્ધો અહં, ઉદાસીનો અહં. એસે બહુત શબ્દ છે. બંધ અધિકારમાં આખિરમાં, સર્વવિશુદ્ધમાં પૂરા હોતા છે વહાં, ઓર મોક્ષ પૂરા હોતા છે, વહાં. આહા..! ત્રીન જગલ. સબ જીવ.. ભગવાન! સર્વ જીવ મોક્ષકો પ્રાપ્ત હોઓ. સર્વ જીવ કર્મરહિત હોઓ, સર્વ જીવ આનંદકી પૂર્ણ દશાકો પ્રાપ્ત હોઓ. એસી ધર્મકી ભાવના છે. આહાહા..! સમય હો ગયા...

(શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ!)